क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 02 अंक: 45, शनिवार, 09 मार्च, 2019, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सार-समाचार

हिमाचल के किन्नौर में महसूस किए गए भूकंप के झटका, यहां था भूकंप का केंद्र

शिमला.

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में शुक्रवार को दोपहर बाद 2.8 की कम तीव्रता वाला भूकंप आया. मौसम विभाग ने यह जानकारी दी. विभाग ने बताया कि जिले और उसके आसपास के क्षेत्रों में दोपहर 12.01 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए और भूकंप का केंद्र किन्नौर में 10 किमी उत्तर-पूर्व में था.

उन्होंने बताया कि घटना में किसी नुकसान या किसी के हताहत होने की तत्काल कोई खबर नहीं आई है.

भूकंप आने पर क्या ना करें

- भूकंप के दौरान आपको लिफ्ट का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए.
- बाहर जाने के लिए लिफ्ट की बजाय सीढ़ियों का इस्तेमाल करें.
- कहीं फंस गए हों तो दौड़ें नहीं. इससे भूकंप का ज्यादा असर होगा.
- अगर आप गाड़ी या कोई भी वाहन चला रहे हो तो उसे फौरन रोक दें.
- वाहन चला रहे हैं तो बिल्डिंग, होर्डिंग्स, खंभों, फ्लाईओवर, पुल से दूर सड़क के किनारे गाड़ी रोक लें.
- भूकंप आने पर तुरंत सुरक्षित और खुले मैदान में जाएं. बड़ी इमारतों, पेड़ों, बिजली के खंभों से दूर रहें.
- भूकंप आने पर खिड़की, अलमारी, पंखे, ऊपर रखे भारी सामान से दूर हट जाएं ताकि इनके गिरने से चोट न लगे.
- टेबल, बेड, डेस्क जैसे मजबूत फर्नीचर के नीचे छिप जाएं.
- किसी मजबूत दीवार, खंभे से सटकर सिर, हाथ आदि को किसी मजबूत चीज से ढककर बैठ जाएं.

लोकसभा चुनाव: सपा ने भी जारी की 6 प्रत्याशियों की पहली लिस्ट, मैनपुरी से लड़ेंगे मुलायम

नई दिल्ली.

समाजवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव के लिए 6 प्रत्याशियों की पहली लिस्ट जारी की है. इसके तहत सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव मैनपुरी से लोकसभा चुनाव लड़ेंगे. फिलहाल वह आजमगढ़ से सांसद हैं. 2014 में वह इन दोनों ही सीटों से जीते थे लेकिन बाद में उन्होंने मैनपुरी सीट छोड़ दी थी. मुलायम के अलावा बदायूं से धर्मेंद्र यादव सपा प्रत्याशी होंगे. अखिलेश यादव के करीबी माने जाने वाले धर्मेंद्र यादव 2014 के चुनाव में मोदी लहर के बावजूद बदायूं से ही जीते थे. उनको एक बार फिर सपा ने उसी सीट से मैदान में उतारा है.

इसी तरह से फिरोजाबाद से मौजूदा सांसद अक्षय यादव को फिर से मैदान में उतारा गया है. इसके अलावा बहराइच से शब्बीर बाल्मीकि, रॉबर्ट्सगंज से भाईलाल कोल और इटावा से कमलेश कठेरिया को सपा ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए प्रत्याशी बनाया है.

महिला दिवस के मौके पर आ सकती है दूसरी लिस्ट

सूत्रों के मुताबिक महिला दिवस के मौके पर सपा की दूसरी लिस्ट भी जारी हो सकती है. लोकसभा चुनाव को लेकर समाजावादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव दोपहर बाद प्रत्याशियों की दूसरी सूची भी जारी कर

सकते हैं. अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव को एक बार फिर कन्नौज से लोकसभा चुनाव लड़ाया जा सकता है. वहीं लखीमपुर खीरी से सपा के राज्यसभा सांसद रवि वर्मा की बेटी पूर्वी वर्मा को लोकसभा टिकट मिल सकता है. हरदोई जो कि सुरक्षित सीट है और वहां से ऊषा वर्मा को उम्मीदवार बनाया जा सकता है.मुलायम ने टिकट बांटने में देरी की कही थी बात उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों समाजवादी पार्टी (सपा) के संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने सपा और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) गठबंधन पर सवाल खड़े करते हुए कहा था कि गठबंधन कर आधी-आधी सीटों पर चुनाव लड़ रहे हैं इससे आधा उत्तर प्रदेश तो पहले ही हार गए. पार्टी मुख्यालय पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए मुलायम ने कहा, गठबंधन कर आधी-आधी सीटों पर चुनाव लड़ रहे हैं. आधा यूपी तो पहले ही हार गए. जब हम रक्षा मंत्री थे तो सपा ने 42 सीटें जीतीं थी.

मुलायम ने पूछा,सपा-बसपा में आखिर किस आधार पर 37-38 सीटें बांटी गई हैं. सपा की हैसियत ज्यादा है. अगर पार्टी अकेले चुनाव लड़ती तो ज्यादा बेहतर प्रदर्शन करती. उन्होंने कहा कि 2019 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बढ़त दिख रही है. सपा अभी पीछे है.

उन्होंने कहा,लोग टिकट बांटने में देरी कर रहे हैं. मुझे नाम दिया गया है संरक्षक और क्या काम करना है लिखा ही नहीं. जो लोग लड़ना चाहते हैं वह लिखकर दें, मैं तुरंत टिकट दूंगा.

कांग्रेस की पहली सूची जारी

इससे पहले गुरुवार को कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के लिए उत्तर प्रदेश और गुजरात की 15 सीटों पर अपने उम्मीदवारों की घोषणा की जिसमें संप्रग प्रमुख सोनिया गांधी और पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी के भी नाम हैं जो इस बार भी अपनी परंपरागत सीटें क्रमशः रायबरेली और अमेठी से चुनाव लड़ेंगे.

बिहार में नेपाल के गजराज का कहर, सुपौल में 5 लोगों की मौत

सुपौल:

नेपाल से बिहार के सीमवर्ती क्षेत्र सुपौल में घुस आए एक जंगली हाथी का उत्पात जारी है. पिछले दो दिनों के अंदर इस हाथी ने पांच लोगों की कुचलकर जान ले ली है और कई घरों को ध्वस्त कर घर में रखे अनाज को खा गया है.

पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि बुधवार को नेपाल के मृगवन से भटककर कई हाथी बिहार के भीमनगर क्षेत्र में पहुंच गए थे. इसमें से कई हाथी वापस लौट गए लेकिन एक हाथी सुपौल जिले के आबादी वाले क्षेत्रों में पहुंच गया. इस हाथी ने दो दिनों के अंदर करजाईन, राघोपुर, पिपरा, किसनपुर सहित कई थाना क्षेत्रों में उपद्रव मचाया है.

जिला प्रशासन और वन विभाग की टीम हाथी को वापस नेपाल क्षेत्र में पहुंचाने की कवायद में जुटे हैं. पुलिस के अनुसार, हाथी ने गुरुवार को चौहट्टा गांव में खेत में काम कर रहे श्याम लाल कामत को कुचलकर मार दिया और उत्क्रमित मध्य विद्यालय की कई दीवारों को क्षतिग्रस्त कर दिया. हाथी ने भवानीपुर पंचायत में खेतों में लगी फसल को

नुकसान पहुंचाया और कई घरों को क्षतिग्रस्त कर दिया. हाथी ने करजाईन थाना के वसावनपट्टी गांव में पुतुल देवी (35) को भी पटककर घायल कर दिया तथा मोतीपुर गांव में साइकिल सवार युगेश्वर यादव (50) को कुचल दिया जिससे घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई. इससे पहले हाथी बुधवार को राघोपुर थाना के नरहा गांव होते हुए धर्मपट्टी गांव पहुंचा था जहां घर के बाहर खेल रहे 12 वर्षीय बच्चे मोहम्मद अब्बास को कुचलकर घायल कर दिया, जिसकी बाद में इलाज के दौरान मौत हो गई. इसने जहलीपट्टी गांव में धनिया देवी (55) की तथा कोरिया पट्टी में रंजीत कुमार (45) की भी कुचलकर जान ले ली.

सुपौल के जिलाधिकारी महेंद्र कुमार ने मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा करते हुए कहा कि हाथी को वापस नेपाल क्षेत्र में भेजने के लिए वन विभाग और पुलिस की टीम लगातार प्रयास कर रही है.

वहीं, वन क्षेत्र पदाधिकारी सुरेश प्रसाद गुप्ता ने शुक्रवार को बताया कि अक्सर इस क्षेत्र में नेपाल से हाथियों का झुंड पहुंच जाता है लेकिन वापस भी चला जाता है. इस बार एक हाथी भटककर आबादी वाले क्षेत्र में पहुंच गया. उन्होंने कहा कि हाथियों को रात में देखने में परेशानी होती है जिस कारण वे रात को ज्यादा नुकसान करते हैं.

एयर स्ट्राइक: गृहमंत्री बोले, 'जो युद्ध वीर होता है वह मारे गए लोगों की गिनती नहीं करता'

जयपुर.

गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि हमारी वायु सेना के जवान लड़ाकू विमान लेकर एक मिशन के तहत पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों का सफाया करने गये थे,कोई फूल बरसाने और सैर-सपाटा करने नहीं गए थे.

राजनाथ सिंह ने ब्यावर में शक्ति केंद्र प्रमुख सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि पहली बार पाकिस्तान को यह अहसास हुआ होगा कि अब आतंकवाद का कारोबार पाकिस्तान की धरती पर भी बेखौफ होकर और बेरोकटोक होकर नहीं चलाया जा सकता है.

उन्होंने कहा कि यदि पाकिस्तान की धरती पर आतंकवाद के ठिकाने चलते रहेंगे तो पाकिस्तान को उसकी सबसे बड़ी कीमत चुकानी पडेगी और इस बात का अहसास हमारी सेना ने जवानों ने पाकिस्तान को करा दिया है.

%लेकिन यहां पर कुछ लोगों को सदमा पहुंचा है% उन्होंने कहा कि लेकिन दुख तब होता है, भारत ने पाकिस्तान के आतंकवादी ठिकानों पर कार्रवाई की तो पाकिस्तान की बौखलाहट तो समझ में आती है लेकिन यहां पर कुछ लोगों को सदमा पहुंचा है. वे हमसे सबूत मांग रहे है कि प्रमाण लाइये.

उन्होंने कहा कि वायुसेना के जवानों ने 'टारगेट' को निशाना बनाया था. उन्होंने कहा,%मैं संख्या पूछने वालों से कहना चाहता हूं कि जो युद्ध वीर होता है वह मारे गये लोगों की गिनती नहीं करता है.

गृहमंत्री ने साधा राजनाथ सिंह पर निशाना उन्होंने कहा कि आतंकवाद और आतंकवादियों के संबंध में कांग्रेस के दोस्तों का रवैया इतना भ्रामक और खतरनाक है कि कांग्रेस के कुछ नेता ओसामा बिन लादेन जैसे आतंकवादी को 'ओसामा जी' कहते है. हाफिज सईद को 'हाफिज जी' कहते है.

उन्होंने कहा कि आतंकवाद के सवाल पर ऐसे लोगों की न नीति साफ है और न ही नीयत साफ है. आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सभी दलों को एकजुट होकर खड़ा होना चाहिए. सिंह ने कहा कि हमारी सेना के जवानों ने पिछले पांच वर्षों में तीन बार दुनिया के दूसरे देश की धरती पर जाकर आतंकवादियों का सफाया करने में कामयाबी हासिल की है.

गृह मंत्री ने कहा कि हम भारत को विश्व गुरू बनाना चाहते है और इस काम को भाजपा कर सकती है. हम राजनीति करते है तो इंसाफ और इंसानियत के आधार पर करते है. उन्होंने कहा कि कश्मीर के लोग हमारे थे है और रहेंगे तथा देश में पढ़ रहे सभी कश्मीरी छात्रों की पूरी हिफाजत की जानी चाहिए.

राजनीतिक दलों को सार्वजनिक स्थलों की सूरत बिगाड़ने की अनुमति नहीं: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली:

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को तमिलनाडु सरकार से कहा कि राजनीतिक दलों को प्रचार के लिए सार्वजनिक स्थलों के विरूपण की अनुमति नहीं दी जा सकती.प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई, न्यायमूर्ति एस अब्दुल नजीर और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की तीन सदस्यीय खंडपीठ ने तमिलनाडु सरकार से कहा कि वह पहाड़ियों, पर्वतों, चट्टानों और सार्वजनिक स्थलों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के विरूपण को रोकने के संबंध में उठाए गए कदमों के बारे में दो सप्ताह में सूचित करे.

पीठ ने इस मामले की सुनवाई शुरू होते ही कहा, ''हम राजनीतिक दलों के नारों और विज्ञापनों के साथ सार्वजनिक स्थलों एवं संपत्तियों के विरूपण की अनुमति नहीं देंगे.''

केंद्र सरकार और राज्य सरकार को जारी किए थे नोटिस

उच्चतम न्यायालय ने समूचे तमिलनाडु में सड़कों के किनारे डिजिटल बैनर लगाने से राजनीतिक दलों को रोकने की मांग करने वाली परमार्थ संगठन 'इन डिफेंस ऑफ एनवायरोनमेंट एंड एनीमल्स' की याचिका पर 11 जनवरी को केंद्र और राज्य सरकार को नोटिस जारी किये थे.

जम्मू ग्रेनेड हमले में घायल एक और शख्स की मौत, अस्पताल में चल रहा था इलाज

जम्मू.

जम्मू शहर के बीचों-बीच स्थित भीड़-भाड़ वाले बस स्टैंड पर ग्रेनेड हमले में घायल हुए 32 वर्षीय एक व्यक्ति ने शुक्रवार को दम तोड़ दिया. इसके साथ ही हमले में मरने वालों की संख्या दो हो गई है. अधिकारियों ने बताया कि अनंतनाग जिले के मट्टन गांव के निवासी मोहम्मद रियाज ने यहां सरकारी मेडिकल कॉलेज में आज तड़के दम तोड़ दिया. घटना के कुछ घंटो बाद ही पुलिस ने हमलावर को गिरफ्तार कर लिया था. साथ ही उन्होंने बताया था कि आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन ने उसे हमले को अंजाम देने को कहा था. जम्मू के पुलिस महानिरीक्षक एम के सिन्हा ने बताया कि कुलगाम के खानपोरा-दस्सें गांव के निवासी यासिर जावेद को हिजबुल मुजाहिदीन के जिला कमांडर (कुलगाम) फारूक अहमद भट्ट उर्फ 'उमर' ने हमले को अंजाम देने को कहा था.

उन्होंने बताया कि एक रात पहले कुलगाम से निकलने के बाद भट्ट ग्रेनेड के साथ गुरुवार सुबह जम्मू पहुंचा था. हमला करने के बाद वह मौके से फरार हो गया था लेकिन पुलिसकर्मियों ने उसे शहर की बाहरी सीमा के पास नगरोटा में गिरफ्तार कर लिया था.पुलवामा आतंकवादी हमले के केवल तीन सप्ताह बाद ही जम्मू में यह ग्रेनेड हमला किया गया है.

एयर इंडिया: अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला क्रू के हाथों में 52 फ्लाइट्स की कमान

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को एतिहासिक बनाने के लिए एयर इंडिया ने 40 घरेलू और 12 अंतराष्ट्रीय उड़ानों में महिला क्रू की तैनाती की गई है. इन फ्लाइट्स में पायलट से लेकर फ्लाइट अटेंडेंट तक सभी महिलाएं हैं.

नई दिल्ली.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को ऐतिहासिक बनाने के लिए एयर इंडिया ने अपनी 52 फ्लाइट की कमान पूरी तरह से महिलाओं के हाथों में सौंप दी है. एयर इंडिया ने जिन फ्लाइट्स की कमान महिला-क्रू के हाथों में सौंपी गई हैं, उसमें 40 घरेलू और 12 अंतरराष्ट्रीय उड़ाने शामिल हैं. एयर इंडिया के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, 8 मार्च को आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर देश के विभिन्न गंतव्यों से उड़ान भरने वाली इन सभी 52 फ्लाइट्स में पायलट से लेकर फ्लाइट अटेंडेंट तक सभी महिलाएं होंगी.

उल्लेखनीय है कि 2017 में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एयर इंडिया की महिला-क्रू ने पूरी दुनिया का चक्कर लगाकर इतिहास रचा था. पूरी दुनिया का चक्कर लगाने वाली उड़ान की खासियत यह थी कि इस फ्लाइट की टिकट बुकिंग से लेकर पायलट, फ्लाइट-क्रू, इंजीनियरिंग स्टाफ, डिस्पैचर सहित सभी महिलाएं थी. 2017 में इस फ्लाइट का नेतृत्व एयर इंडिया की कैप्टन क्षमता बाजपेयी और कैप्टन सुनीता नरूला ने किया था. इस दल में कुल 19 सदस्यीय क्रू था. 16 फरवरी को दिल्ली एयरपोर्ट से रवाना हुए इस दल ने पहली बार सबसे लंबी उड़ान भरने का इतिहास भी बनाया था.

सभी एयरपोर्ट पर सम्मानित होगा महिला-क्रू

एयर इंडिया के वरिष्ठ अधिकारी ने अनुसार, इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को यादगार बनाने के लिए एयर इंडिया ने 52 उड़ानों में महिला क्रू को शामिल करने का फैसला किया है, जिसमें 12 फ्लाइट्स इंटरनेशनल सेक्टर की हैं. इन सेक्टर्स में न्यूयार्क, नेवार्क, शिकागो, वाशिंगटन, सैनफ्रांसिस्को, सिडनी, लंदन, रोम, शंघई और पेरिस भी शामिल हैं. उन्होंने बताया कि 8 मार्च को फ्लाइट रवाना होने से पहले और फ्लाइट के गंतव्य में पहुंचने के बाद सभी महिला पायलट और फ्लाइट-क्रू को सम्मानित भी किया जाएगा.

एयर इंडिया के प्रबंध निदेशक अश्वनी लोहानी ने कहा कि एयरलाइंस की हर सफलता में महिला कर्मियों की अग्रणी भूमिका रही है. 2017में 19 सदस्यीय महिला क्रू ने पूरे विश्व का चक्कर लगाकर एयरलाइंस को वैश्विक पहचान दिलाई थी.

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 12 अंतरराष्ट्रीय और 40 घरेलू उड़ानों का नेतृत्व महिला पायलट और क्रू के हाथ में देकर एयरलाइंस ने महिला सशक्तिकरण की तरफ अपना कदम बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि मैं अपनी महिला क्रू को अपनी अदम्य 'नारी शक्ति' के लिए बधाई देना चाहूंगा.

प्रदूषण होगा दूर, जब पौधे हों भरपूर

- डा. सीता राम धीमान

घर की सुंदरता को बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति घर के कोनों में तरह तरह के सुंदर फूलों व पत्तों वाले पौधे उगा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में घरों के अंदर उगाए जाने वाले सजावटी पौधों की तरफ लोगों का झुकाव काफी बढ़ा भी है। पौधों को बैडरूम, रसोईघर, खाना खाने वाले कमरे, सीढ़ियों, बरामदे, बालकनी में या फिर दूसरे अन्य स्थानों की शोभा बढ़ाने के लिए भी रखा जाता है। इन सभी जगहों के लिए वहां के वातावरण, खासतौर पर रोशनी और तापमान के मद्देनजर विभिन्न किस्मों के पौधों का चयन व उपयोग किया जा सकता है। पौधे किसी घर की खूबसूरती में चारचांद ही नहीं लगाते, वे वहां के वातावरण को शुद्ध करने के साथ कई अन्य फायदे भी पहुंचाते हैं।

पौधे का चुनाव

पौधों का चुनाव, उन के लगाने के स्थान विशेष व उपयोग के अनुसार किया जा सकता है। घर के अंदर यदि %फोकल पौइंट%, ऐसी जगह जहां नजर सब से पहले जाए, बनाना है तो पौधे को इस तरह से रखा जाना चाहिए कि वह घर का ही एक हिस्सा लगे। इस के लिए कमरे व पौधे के आकार का गहरा संबंध है। एक विकसित रबड़ प्लांट फाइकस इलास्टिका छोटे कमरे के लिए उचित नहीं होगा। इसी तरह अकेला 'फर्न' का पौधा बड़े कमरे में अपनी छटा नहीं बिखेर पाएगा।

पेड़ों की बहुत सी किस्में जो बाहर बहुत बड़ा आकार ले लेती हैं, उन्हें अंदर गमलों में बहुत छोटे आकार में कई सालों तक रखा जा सकता है। इन में 'फाइकस' की कई किस्में खास हैं जोकि बहुत ही शानदार व प्रभावी दिखती हैं और उन्हें गमलों में सुविधापूर्वक उगाया जा सकता है। 'फाइकस बैंजामिना', 'फाइकस इलास्टिका', 'फाइकस ट्राईऐंगुलेरिस', 'फाइकस जैपोनिका', 'ग्रेविलिया रोबस्टा', 'सैफ्लेरा आरबोरिकोला' और 'सैफ्लेरा ग्रैनुलोसा' खासी मशहूर हैं। इन्हें गमलों में उगा कर घर के अंदर की सजावट में प्रयोग किया जा सकता है।

कभीकभी इन पौधों को बड़े कमरों के विभाजन के लिए भी इस्तेमाल में लाया जाता है। इस के लिए 'डरासीना', 'मोनेस्टेरा', 'फिलोडेंड्रोन', 'सैफ्लेरा', 'सिंगोनियम' इत्यादि की जातियां व प्रजातियां तथा 'कोडियम वैरीगेटम', 'कोलियस ब्लूमी' और 'कोरडीलाइन टरमीनेलिस' की किस्में अच्छी रहती हैं।

घरों के अंदर बहुत से काम इन पौधों की मदद से किए जा सकते हैं। लेकिन यह जानना आप के लिए जरूरी है कि आप के घर के वातावरण में कौनकौन से पौधे आसानी से उग सकते हैं, क्योंकि इन सभी की रोशनी, तापमान व आर्द्रता की अपनी अलगअलग जरूरतें होती हैं।ये पौधे 15-30 डिगरी सैंटीग्रेड तापमान को अधिक पसंद करते हैं। इसी तरह से इन के लिए आर्द्रता, गमले व गमले की मिट्टी, खाद व पानी तथा अन्य देखरेख, पौधे की जाति व प्रजाति पर निर्भर करती है। मगर यह जरूरी है कि कम से कम 15 दिन में एक बार पौधे को भरपूर मात्रा में पानी दें ताकि गमलों के पेंदों में बने छेद से पानी बाहर निकल जाए।

इसी के साथसाथ यदि सुबह की रोशनी इन पौधों को मिले तो ये लंबे समय तक तरोताजा रहते हैं। ध्यान रहे, पौधों के बीच उचित दूरी हो ताकि वे अच्छी तरह से फैल सकें। फूल वाले पौधों को छायादार कोने में न रखें। पौधों को अत्यधिक गरमी व ठंड से दूर रखें। चाय या कौफी के बचे हिस्से को गमले में न डालें। पत्तों की ज्यादा चमक के लिए पानी के अलावा दूसरी चीज इस्तेमाल न करें। घरों के अंदर इन पौधों के न पनपने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि ठंड, कुहरा, रोशनी की कमी या अधिकता, अत्यधिक पानी, लवणीय पानी का इस्तेमाल, गलत समय में गमले बदलना इत्यादि। पौधे सिर्फ सजावट का ही काम नहीं करते बल्कि घरों के अंदर तापमान व प्रदूषण को कम करने में भी मदद करते हैं। ये पौधे न सिर्फ वायुमंडलीय हवा को शुद्ध करते हैं बल्कि वे घरों के अंदर की हवा को भी शुद्ध रखते हैं और सीमित वातावरण में उस की गुणवत्ता को और भी बढ़ावा देते हैं। जो घर हवादार नहीं होते हैं उन के अंदर गैसीय जहरीले पदार्थ एकत्रित होते रहते हैं।

बर्बाद हुआ बेमौसम वर्षा का पानी

वर्षा जल को संचय करने के तरीकों पर काम लंबे समय से किया जा रहा है, मगर प्रयासों में कमी और जागरूकता के अभाव में लक्ष्य आज तक पूरा नहीं हो सका है। आज जल संकट पूरी दुनिया की गंभीर समस्या है। वर्षाजल संरक्षण को बढ़ावा देकर गिरते भूजल स्तर को रोका व उचित जल-प्रबंधन से सबको शुद्ध पेयजल मुहैया कराया जा सकता है। यही टिकाऊ विकास का आधार हो सकता है।

मौसम के बदलते मिजाज में लगातार हो रहे परिवर्तन ने हर किसी चकित कर दिया है। कुदरत ने कई दशकों बाद ऐसा मौका दिया, जब चैत फरवरी माह में बेमौसम बेहताशा बारिश ने पूरे जग को सराबोर कर दिया। कुछ समय से रुक-रुक कर हो रही बारिश ने समूचे भारत का मौसम सुहावना किया हुआ है। कमोबेश मौजूदा स्थिति कुछ जून-जुलाई जैसी बनी है। मौसम विभाग के मुताबिक, बारिश होने की संभावना अभी कुछ सप्ताह और भी बनी रहेगी। दुख इस बात का है कि बेमौसम वर्षा का जल भी संग्रह नहीं हो सका। जलाशय न होने के कारण पिछले एक माह से हो रही बारिश का पानी बेकार चला गया। लेकिन इस बारिश से दो फायदे जरूर हुए। अव्वल, कराहते पर्यावरण के लिए इस पानी ने धरती को नया जीवन देने का काम किया है, वहीं दूसरा, बदलते मौसम के मिजाज से न सिर्फ प्रदूषित हो रहे शहरों को बड़ी राहत दी, बल्कि दूषित पर्यावरण को भी काफी हद तक संतुलित किया। हालांकि, इस बारिश से ग्रामीण अंचलों को कुछ नुकसान भी हुआ है। कई जगहों पर पड़े तेज ओलों ने खेतों में तैयार फसलों को नुकसान भी किया है।

गौरतलब है कि बारिश के पानी को एकत्र करने के लिए कागजी कोशिशें बहुत की जाती हैं। वर्षा का पानी जलाशयों में जमा हो सके, इस बाबत सभी सरकारें प्रचार-प्रसार पर भी जमकर पैसा बहाती रही हैं। लेकिन नतीजा शून्य निकलता है। इस वक्त देश के कई जलाशय सूखने के कगार पर खड़े हैं। कई जलाशयों को उजाड़ भी दिया गया है। करीब दशक भर पहले खेतीबाड़ी के लिए पानी की कमी न हो, उसके लिए कई विशाल जलाशय बनाए गए थे। इनको सिंचाई, विद्युत और पेयजल की सुविधा के लिए हजारों एकड़ वन और सैकड़ों बस्तियों को उजाड़कर बनाया गया था, मगर वह सब दम तोड़ रहे हैं। बर्बाद होते पानी को देखते हुए केंद्र सरकार ने सभी जलाशयों और जल संग्रहित संसाधनों की नवीनतम रिपोर्ट जल मंत्रालय को मुहैया कराने का आदेश दिया है। रिपोर्ट मिलने के बाद सरकार नए सिरे से सभी जलाशयों की समीक्षा करेगी।

सन् 2012 में केंद्रीय जल आयोग ने जलाशयों और तालाबों में जल उपलब्धता के जो आंकड़े दिए थे तब उस समय अंदाजा लगाया गया था कि आने वाले कुछ सालों में पानी और बिजली की भयावह स्थिति का सामना करना पड़ेगा, कमोबेश स्थिति कुछ वैसे ही बनी भी। करीब डेढ़ दशक पहले केंद्र सरकार ने बारिश के पानी से जितना विद्युत उत्पादन का लक्ष्य रखा गया था, वह भी पूरा नहीं हो सका। कारण पानी का संग्रह न होना है। पानी बचाने की अहमियत को हमें समय रहते समझना होगा, वरना स्थिति और भी भयाभय होने वाली है। गौर करने वाला पहलू यही है अगर पूर्व में निर्मित किए गए सभी जलाशय जीवित अवस्था में होते तो मौजूदा समय में हो रही बारिश का पानी संग्रह किया जा सकता था और हमें प्रतिकूल स्थिति का सामना भी नहीं करना पड़ता।

देश में 76 प्रमुख जलाशय है, जो तकरीबन सूखे के कगार पर पहुंच चुके हैं। इन 76 जलाशयों में जिन 31 जलाशयों से विद्युत उत्पादन किया जाता है उनमें पानी की कमी के चलते विद्युत उत्पादन में लगातार कटौती हो रही है। जिन जलाशयों में पानी की कमी है, उनमें उत्तर प्रदेश के माताटीला बांध और रिहन्द, मध्य प्रदेश के गांधी सागर एवं तवा, झारखंड के तेनूघाट, मेथन, पंचेतहित एवं कोनार, महाराष्ट्र के कोयना, ईसापुर, येलदरी तथा ऊपरी तापी, राजस्थान का राण प्रताप सागर, कर्नाटक का वाणी विलास सागर, उड़ीसा का रेंगाली, तमिलनाडु का शोलायार, त्रिपुरा का गुमटी और पश्चिम बंगाल के मयूराक्षी तथा कंग्साबती जलाशय शामिल हैं। इसके लिए मानवीय हिमाकत तो है कि सरकारी तंत्र भी बराबर का भागीदार है। किसानों की जमीन पर जो जलाशय बनाए गए थे उनकी स्थिति भी काफी खराब है। जलाशयों को बनाते समय हजारों एकड़ वनों की कटाई की गई थी और काफी संख्या में बस्तियों तक को भी उजाड़ा गया था, इसलिए पर्यावरण का संतुलन बिगड़ना भी लाजिमी था।

प्राकृतिक संसाधनों के अथाह दोहन ने अब हालात और खराब कर दिए हैं। ऊपर से रही सही कसर ग्लोबल वार्मिंग के खतरों ने पूरी कर दी है। मौसम में जो बदलाव आया उससे तो सभी वाकिफ हैं और वर्षा में भी दिन-प्रतिदिन कमी आती जा रही है। लगातार कम बारिश के चलते अब माताटीला सहित चार जलाशय अपनी स्थापित जल क्षमता पर्याप्त न होने के कारण न तो विद्युत उत्पादन के निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर पाए और न ही सिंचाई और पेयजल की तय क्षमताओं पर खरे उतरे। यह सच है कि 'जल ही जीवन है' और इसके बगैर किसी का जीवन संभव नहीं लेकिन इसके अथाह दोहन ने जहां कई तरह से पर्यावरणीय संतुलन बिगाड़ कर रख दिया है वहीं कई मानव निर्मित संयंत्र भी दिन-ब-दिन मृतप्राय होते जा रहे हैं। दिन प्रतिदिन गहराते जा रहे पर्यावरणीय संकट ने पूरी मानव जाति को हिला कर रख दिया है। स्वयं हमारे अपने देश में तो नौबत यहां तक आ गई है कि नदियों के पानी के बंटवारे को लेकर कई राज्यों में हमेशा ठनी रहती है। इन हालात को देखकर यह अवधारणा चरितार्थ होती प्रतीत हो रही है कि संभवतः अगला विश्व युद्ध जल को लेकर ही होगा।

बहरहाल यह अवधारणा सच हो या फिर गलत लेकिन स्थिति की भयावहः पर अगर जल्द काबू नहीं पाया गया तो हम कुदरती पैदावार से लेकर विद्युत उत्पादन से महरूम होने के साथ-साथ प्राकृतिक असंतुलन की मार भी झेलने को विवश होंगे। मौजूदा समय में हो रही बेमौसम बारिश का पानी जिस कदर बर्बाद हुआ है उसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा। अगर जलाशय जीवंत हालत में होते तो सारा पानी संग्रह हो जाता। चार जलाशय तो ऐसे हैं जो पिछले एक साल से लगातार पानी की कमी से लक्ष्य से भी कम विद्युत उत्पादन कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश के शिंद जिले के जलाशय की स्थापित क्षमता कुल 399 मेगावाट है। इसके लिए अप्रैल 2005 से जनवरी 2006 तक 938 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन वास्तविक उत्पादन 847 मिलियन यूनिट ही हो सका। मध्य प्रदेश के गांधी सागर में भी इसी अवधि के लक्ष्य 235 मिलियन यूनिट की तुलना में मात्र 128 मिलियन यूनिट और राजस्थान के राणा प्रताप सागर में 271 मिलियन यूनिट के लक्ष्य की तुलना में सिर्फ 203 मिलियन यूनिट विद्युत का उत्पादन हो सका।

अगर अब इन तकनीकों का गंभीरता से मूल्यांकन करके सुधार नहीं किया गया तो पूरे राष्ट्र को जल, विद्युत और न जाने कौन-कौन सी आपदाओं का सामना करना पड़ेगा, जिनसे निपटना सरकार और प्रशासन के सामर्थ्य की बात नहीं रह जाएगी। नीति आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में चिंता जाहिर की है कि देश में इस समय तकरीबन 60 करोड़ आबादी पानी की समस्या से जूझ रही है। देश के तीन-चौथाई घरों में पीने का साफ पानी तक मयस्सर नहीं है। आने वाले दिनों में हालात और बिगड़ेंगे। असल में आज हम भीषण जल संकट से जूझ रहे हैं। देश में मानसून बेहतर रहने के बावजूद यह स्थिति आ सकती है इसका अहसास कभी नहीं किया गया। आज देश दुनिया में जल गुणवत्ता के मामले में 122 देशों में 120वें नंबर पर है। पानी के मामले में यह हमारी बदहाली का सबूत है।

■ रमेश ठाकुर
(वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादकीय

रफाएल सौदे पर सरकार का सेल्फ गोल

14 फरवरी के पहले रफाएल विमान सौदे में गड़बड़ी का मामला कांग्रेस पूरे जोर-शोर से उठाती थी और मोदी सरकार अपने अलग-अलग मंत्रियों को विपक्ष के सवालों के जवाब देने आगे किया करती थी। लेकिन पुलवामा के बाद देश का राजनैतिक माहौल बदल गया।

मोदीजी शहादत पर सहानुभूति बटोरने में जुट गए और उसके बाद 26 फरवरी को बालाकोट एयर स्ट्राइक के बाद दुश्मन को ललकारने में लग गए। विपक्षी दल भी मौके की नजाकत देखकर संभल कर बोलने लगे। रफाएल की जगह दूसरे मुद्दे चर्चा का विषय बन गए। कांग्रेस रफाएल पर थोड़ा पीछे हुई तो मोदीजी को दो कदम आगे आने का मौका मिला। उन्होंने पुलवामा के बाद कार्रवाई के लिए मिग-21 विमान के इस्तेमाल पर कहा कि अगर आज रफाएल हमारे पास होता तो परिणाम कुछ और ही होता। लेकिन उनका यह बयान भी उल्टा ही पड़ा, क्योंकि पिछले पांच सालों से सरकार उन्हीं की है, फिर सौदे में देरी के लिए वे पहले की यूपीए सरकार को कैसे जिम्मेदार ठहरा सकते हैं? उनके इस बयान पर पाकिस्तानी मीडिया में खिंचाई भी की गई, कहा गया कि- इसका मतलब ये है कि पाकिस्तान की वायुसेना भारतीय वायुसेना से बेहतर है।

रफाएल पर यह बेमतलब की बयानबाजी मोदीजी के काम नहीं आई। और अब सुप्रीम कोर्ट में भी मोदी सरकार एक बार फिर रफाएल सौदे पर घिरती दिख रही है। दरअसल पिछले साल दिसंबर में सुप्रीम कोर्ट ने रफाएल विमान सौदे में फैसला सुनाया था कि इस सौदे में किसी तरह की गड़बड़ी नहीं है। तब सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को गोल्ड मैडल की तरह सरकार ने पहना और विपक्ष की खिंचाई की। जब इस सौदे पर कोई सवाल करता तो भाजपा प्रवक्ताओं का यही तर्क होता कि हमें तो शीर्ष अदालत से क्लीन चिट मिल गई है।

लेकिन कांग्रेस ने जनता के बीच रफाएल सौदे पर सवाल करना जारी रखा और इधर अदालत में प्रशांत भूषण, यशवंत सिन्हा, अरुण शौरी, संजय सिंह और एम एल शर्मा ने पुनर्विचार याचिका दायर कर आदेश की समीक्षा करने के लिए अपील की।

याचिकाकर्ताओं का कहना था कि सरकार ने रफाएल लड़ाकू विमानों की खरीद के लिए निर्णय लेने की सही प्रक्रिया का पालन नहीं किया है, मोदी सरकार ने 3 पी यानी प्राइस, प्रोसिजर और पार्टनर के चयन में गफलत बनाए रखी और अनुचित लाभ लिया है। एक महत्वपूर्ण बात ये है कि अदालत ने अपना फैसला सरकार द्वारा सौंपे गए सीलबंद नोट के आधार पर दिया था। जिसमें जिक्र था कि सीएजी ने रफाएल सौदे पर अपनी रिपोर्ट संसद में रखी है। जबकि ऐसा हुआ ही नहीं।

सरकार ने भी माना है कि नोट में टाइप की भूल से मतलब बदल गया।

प्रशांत भूषण ने इस संबंध में जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई के लिए एक याचिका दायर की है। 26 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय लिया था कि वह अपने फैसले पर खुली अदालत में फिर से विचार करेगा।

तब सरकार के लिए इसे ही बड़ा झटका माना गया था, क्योंकि पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई का मतलब ही है कि सब कुछ उतना पाक-साफ नहीं है, जितना सरकार बता रही है।

आलेख

आदिवासियों की सुध लेने की जरूरत

सर्वोच्च अदालत ने वन क्षेत्र में रह रहे 11.8 लाख आदिवासियों व निवासियों की बेदखली के अपने ही आदेश पर रोक लगा दी है। यह आदेश इसलिए जरूरी है क्योंकि आज जंगलों को उजाड़ा जा रहा है और आदिवासियों को उनके मूल घर से विमुख किया जा रहा है। जरूरत आज आदिवासियों का जीवन और संस्कृति दोनों बचाने की है। अन्यथा संस्कृति और समाज की टूटन उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग कर देगी।

यह राहतकारी है कि सर्वोच्च अदालत ने वन क्षेत्र में रह रहे 11.8 लाख आदिवासियों और निवासियों की बेदखली के 13 फरवरी के अपने आदेश पर रोक लगा दी। अब कोर्ट इस मामले की अगली सुनवाई 10 जुलाई को करेगा, लेकिन इससे पहले देश की 21 सरकारों को शपथपत्र दाखिल कर वन भूमि पर लोगों के दावे नकारने की प्रक्रिया का ब्यौरा देना होगा। उन्हें यह बताना होगा कि जिनके खिलाफ बेदखली का आदेश जारी किया गया है, उन्हें बेदखल किया गया है कि नहीं। अदालत ने दो टूक कहा है कि आदिवासियों की आड़ में बाहरी लोगों को वन भूमि पर कब्जा करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यहां यह जानना आवश्यक है कि अदालत ने यह आदेश केंद्र सरकार की उस अर्जी पर दिया है जिसमें तत्काल सुनवाई कर आदिवासियों को वन भूमि से बेदखल किए जाने के आदेश पर रोक लगाने की मांग की गई थी।

उल्लेखनीय है कि सर्वोच्च अदालत में राज्यों द्वारा दायर शपथपत्र में वन अधिकार अधिनियम के तहत अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पारंपरिक वनवासियों द्वारा किए गए करीब 11 लाख 72 हजार 931 यानी 1.17 मिलियन भूमि स्वामित्व के दावों को विभिन्न आधारों पर खारिज कर दिया गया है। इनमें वे लोग शामिल हैं जो ये सबूत नहीं दे पाए कि कम से कम तीन पीढ़ियों से भूमि उनके कब्जे में थी। यह कानून 31 दिसंबर-2005 से पहले कम से कम तीन पीढ़ियों तक वन भूमि पर रहने वालों को भूमि अधिकार प्रदान करता है। ध्यान देना होगा वन भूमि से बेदखल किए गए सर्वाधिक लोगों की संख्या मध्यप्रदेश, कर्नाटक और ओडिशा में है। इसमें अनुसूचित जनजातियों व अन्य वनों के निवासियों अधिनियम-2006 के तहत भारत भर के वनों में रहने वालों द्वारा प्रस्तुत भूमि स्वामित्व के कुल दावों का तकरीबन 20 प्रतिशत है।

गौरतलब है कि अदालत ने विशेष रूप से 17 राज्यों के मुख्य सचिवों को निर्देश जारी किए है कि उन सभी मामलों में जहां भूमि स्वामित्व के दावे खारिज किए गए हैं उन्हें 12 जुलाई-2019 तक बेदखल किया जाए। ध्यान देना होगा कि साल 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में आदिवासियों की संख्या करीब 104 मिलियन है, पर सिविल सोसायटी समूहों का अनुमान है कि वन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की संख्या 200 मिलियन है जो कि भारत के भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 22 प्रतिशत है। देखना दिलचस्प होगा कि राज्य सरकारें सर्वोच्च अदालत को अपने शपथपत्र में नया ब्यौरा क्या देती है। दो राय नहीं है कि आदिवासियों की आड़ में लाखों लोग वन भूमि पर कब्जा कर बसे हैं जिन्हें बेदखल किया जाना आवश्यक है। राज्य सरकारों को यहां यह भी ध्यान रखना होगा कि सबूत के अभाव में किसी वास्तविक आदिवासी के साथ नाइंसाफी न हो। वैसे भी आदिवासी समाज विस्थापन का दंश भोग रहा है। अभी गत वर्ष ही संयुक्त राष्ट्र संघ की 'द स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स इंडीजीनस पीपुल्स' नामक रिपोर्ट में कहा गया है कि मूलवंशी और आदिम जनजातियां भारत समेत संपूर्ण विश्व में अपनी संपदा, संसाधन और जमीन से वंचित एवं विस्थापित होकर विलुप्त होने के कगार पर हैं। रिपोर्ट से उद्घाटित हुआ है कि खनन कार्य के कारण हर रोज हजारों जनजाति परिवार विस्थापित हो रहे हैं और उनकी सुध नहीं ली जा रही है। विस्थापन के कारण उनमें गरीबी, बीमारी और बेरोजगारी बढ़ रही है।

दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि जंगल को अपनी मातृभूमि समझने वाले जनजातियों के आशियाने को उजाड़ने का जिम्मा खुद सरकारों ने उठा लिया है। जंगलों को काटकर और जलाकर उस भूमि को जिस प्रायोजित तरीके से उद्योग समूहों को सौंपा जा रहा है, उसका प्रभाव न केवल आदिवासियों के आर्थिक जीवन को प्रभावित कर रहा है बल्कि उनकी संस्कृति भी प्रभावित हो रही है। गौर करना होगा कि देश में नब्बे के दशक से ही विदेशी निवेश बढ़ाने की गरज और खनन नीतियों में बदलाव के कारण आदिवासी परंपरागत भूमि से बेदखल किए जा रहे हैं। सरकारें द्वारा गैर कानूनी हथकंडे अपनाकर उनकी जमीन उद्योग समूहों व कारपोरेट सेक्टर को सौंपी जा रही है। एक वैश्विक रिपोर्ट में आदिवासी समुदाय की दशा पर ध्यान खींचते हुए कहा गया है कि इनकी आबादी विश्व की जनसंख्या की पांच फीसदी है, लेकिन दुनिया के 90 करोड़ गरीब लोगों में मूलवासी लोगों की संख्या एक तिहाई है। विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में कुपोषण, गरीबी और सेहत को बचाए रखने के लिए जरूरी संसाधनों के अभाव और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण आदिवासी जनसमूह विश्वव्यापी स्तर पर अमानवीय दशा में जी रहे हैं। यही कारण है कि उनमें आक्रोश पैदा हो रहा है और राज्य व्यवस्था के विरुद्ध आंदोलित होने को विवश हैं।

गौर करें तो भारतीय जनजातीय समाज बेहद सीधा और सरल है। पर उनकी परंपरागत अर्थव्यवस्था पर हमला ने उन्हें उत्तेजित कर दिया है। अब वह अपनी उदार संस्कृति का परित्याग कर हथियार की भाषा बोलने लगे हैं। यहां ध्यान देना होगा कि मूलवासी जनसमूह आजीविका के संकट से तो जूझ ही रहें हैं साथ ही वे कई तरह की बीमारियों से भी लड़ रहें हैं। अगर विकसित देश अमेरिका की ही बात करें तो यहां आम आदमी की तुलना में आदिवासी समूह के लोगों को तपेदिक होने की आशंका 600 गुना अधिक है। उनके आत्महत्या करने की आशंका भी 62 प्रतिशत ज्यादा है। आस्ट्रेलिया में आदिवासी समुदाय का कोई बच्चा किसी अन्य समूह के बच्चे की तुलना में 20 साल पहले मर जाता है। नेपाल में अन्य समुदाय के बच्चे से आदिवासी समुदाय के बच्चे की आयु संभाव्यता का अंतर 20 साल, ग्वाटेमाला के 13 साल और न्यूजीलैण्ड में 11 साल है। विश्व स्तर पर देखें तो आदिवासी समुदाय के कुल 50 प्रतिशत लोग टाइप-2 मधुमेह से पीड़ित है। इस संख्या में और भी इजाफा होने के आसार है। विस्थापन के कारण आदिवासी समूह भाषा के संकट से भी जुझ रहा हैं। संभावना है कि इस सदी के अंत तक आदिवासी समाज की 90 प्रतिशत भाषाएं विलुप्त हो जाएंगी। गौर करें तो विलुप्त होने वाली भाषाओं में सर्वाधिक आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं हैं।

शोध के मुताबिक असम की 55, मेघालय की 31, मणिपुर की 28, नागालैंड की 17 और त्रिपुरा की 10 भाषाएं मरने के कगार पर है। इन्हें बोलने वालों की संख्या लगातार तेजी से घट रही है। उदाहरण के तौर पर सिक्किम में माझी बोलने वालों की संख्या सिर्फ 4 रह गई है। छोटे से राज्य अरुणाचल में ही 90 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। ओडिशा में 47 और महाराष्ट्र एवं गुजरात में 50 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। चूंकि, भारत भाषायी विविधता से समृद्ध देश है लिहाजा आदिवासी क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं का विशेष संरक्षण जरूरी है। वैश्विक आंकड़ों पर गौर करें तो दुनियाभर में 199 भाषाएं ऐसी हैं जो आदिवासी क्षेत्रों में बोली जाती है और अब उनके बोलने-लिखने वाले लोगों की संख्या एक दर्जन से भी कम रह गई है। उदाहरण के तौर पर उक्रेन में बोली जाने वाली कैरेम भी इन्हीं भाषाओं में से एक है जिसे बोलने वालों की संख्या महज छह है। किंतु दुर्भाग्य है कि इस भाषायी विविधता को बचाने लेस पहल नहीं हो रही है। चिंता की बात यह भी है कि आदिवासी समूह सभ्य कहे जाने वाले लोगों के भी निशाने पर है।

अमेरिका हो या फिर भारत हर जगह विकास के नाम पर जंगलों को उजाड़ा जा रहा है। अपनी सुरक्षा और रोजी-रोजगार के लिए जनजातीय समूह के लोग अपने मूलस्थान से पलायन कर रहे हैं। दूसरे समूहों में जाने और रहने के कारण उनकी भाषा और संस्कृति प्रभावित हो रही है। जरूरत आज आदिवासियों का जीवन व संस्कृति दोनों बचाने की है।

■ सीता सिंह
(स्वतंत्र टिप्पणीकार)

'अर्जुन रेड्डी' की तरह ही ईमानदार और सच्चा है 'कबीर सिंह' : शाहिद कपूर

अभिनेता शाहिद कपूर तेलुगू फिल्म 'अर्जुन रेड्डी' की हिंदी रीमेक 'कबीर सिंह' में नजर आयेंगे। अभिनेता का कहना है कि 'कबीर सिंह' की टीम ने मूल फिल्म की भावना को बनाये रखने की कोशिश की है। संदीप वांगा निर्देशित इस फिल्म में शाहिद कपूर मुख्य भूमिका में हैं। संदीप का नाता मूल फिल्म से भी था। फिल्म में कियारा आडवाणी भी हैं और यह फिल्म 21 जून को रिलीज होने वाली है। शाहिद ने पीटीआई- बताया कि मूल फिल्म की भावना बेहद सच्ची और ईमानदार थी। मुझे लगता है कि फिल्म में सभी बातों को हू-ब-हू वैसे ही कहा गया है। यह एक किरदार की यात्रा है जो भावनाओं के कई पड़ावों से गुजरता है।

उन्होंने कहा, ''फिल्म की ईमानदारी दर्शकों को खुद से बांधती है। नहीं तो इस तरह की फिल्म के लिये सीमित दर्शक होते हैं। लेकिन हर वर्ग के दर्शकों ने इसे पसंद किया। अब इसे फिर से नये अंदाज में दोहराने का विचार है।''अभिनेता ने कहा कि उन्होंने फिल्म की मूल भावना को बरकरार रखा ही है साथ ही इसे 'नये अंदाज' में भी पेश करने का प्रयास किया है। फिल्म एक शराबी सर्जन की कहानी है जो अपनी पूर्व प्रेमिका के शादी कर लेने के बाद खुद को तबाही के रास्ते पर ले जाता है।

शाहिद ने कहा कि वह महसूस करते हैं कि किसी फिल्म की रीमेक बनाना मुश्किल प्रक्रिया है क्योंकि आप मूल फिल्म की 'नकल' नहीं बना सकते हैं। मूल फिल्म 'अर्जुन रेड्डी' में हैदराबाद और बेंगलुरु की कहानी थी। यह 'कबीर सिंह' है, जिसमें दिल्ली और मुंबई की कहानी होगी। हो सकता है अर्जुन और कबीर भाई लगते हों लेकिन वे एक ही व्यक्ति नहीं हो सकते हैं। मेरी यात्रा सिर्फ 'कबीर सिंह' की तलाश की है।

कैंसर से जीतने के बाद सोनाली बेंद्रे का पहला फोटोशूट, शेयर की खूबसूरत तस्वीर

ऐक्ट्रेस सोनाली बेंद्रे न्यू यॉर्क से कैंसर का इलाज कराकर भारत वापस आ गई हैं। अब वह अपने काम पर भी ध्यान दे रही हैं। हाल ही में एक टीवी चैनल के इंटरव्यू में सोनाली ने कैंसर से लड़ने के अपने अनुभव को शेयर किया था। उन्होंने यह भी शेयर किया था कि वह बिना बालों के जब भी घर से बाहर निकलती हैं तो उन्हें पहले थोड़ा डर लगता है लेकिन वह खुद को समझाती हैं। अब सोनाली बेंद्रे ने फैशन मैगजीन वोग के लिए फोटोशूट कराया है।

सोनाली बेंद्रे ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी एक तस्वीर शेयर की है। इसके साथ सोनाली ने लिखा है, यह आइडिया बचकाना था। बिना बाल का सिर, कोई मेकअप नहीं और स्कार, ये वोग के नॉर्म नहीं हैं। लेकिन मुझे लगता है कि अब यही मेरा नया नॉर्मल है। मैं मानती हूं मेरे कुछ डर थे लेकिन इनसे बात करते मेरी शंकाएं दूर हो गईं। मैं सबको एक सलाह दूंगी कि सभी लोग अपना नया नॉर्मल ढूंढें। आप आजाद महसूस करेंगे।'

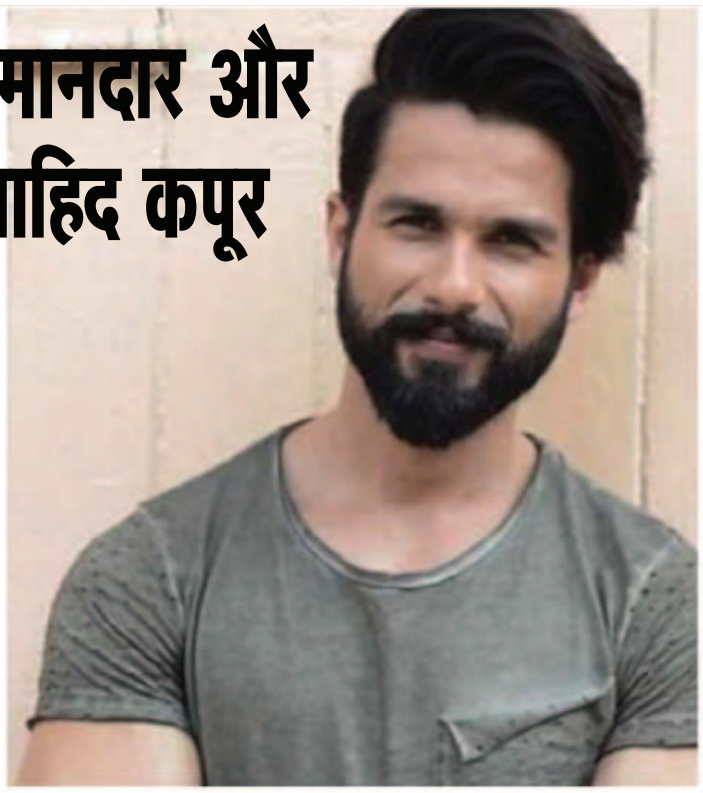

इसके अलावा वोग इंडिया ने भी इंस्टाग्राम पर सोनाली के फोटोशूट की तस्वीरें शेयर की हैं।

पुलवामा टेरर अटैक के बाद अक्षय कुमार ने 'केसरी' से हटाया पाकिस्तानी आर्टिस्ट का गाना

पुलवामा टेरर अटैक के बाद बॉलिवुड के सितारे अपनी फिल्मों में पाकिस्तानी आर्टिस्ट को लेने के मामले में बेहद सतर्क हो गए हैं। कई लोगों ने अपनी फिल्मों के लिए पाकिस्तानी सिंगर्स से गाने बनवा लिए थे, लेकिन पुलवामा हमले के बाद बदले देश के माहौल को देखते हुए वह चुपचाप अपनी फिल्म से वह गाना हटा रहे हैं। ऐसा ही कुछ किया है अक्षय कुमार और करण जौहर ने।

सूत्र बताते हैं कि धर्मा प्रॉडक्शन की रिलीज़ के लिए तैयार अक्षय कुमार स्टारर फिल्म 'केसरी' में एक गाना पाकिस्तानी सिंगर ने गाया था, गाने को फिल्म के अंदर शामिल भी किया जा चुका था, लेकिन पुलवामा हमले के बाद अक्षय कुमार और करण जौहर ने चुपचाप अपनी फिल्म से वह गाना हटा दिया है। इस गाने को लेकर फिल्म की टीम की ओर से अब तक कोई भी आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। फिल्म की टीम का कोई भी सदस्य अपनी फिल्म में इस तरह के किसी गाने को लेकर कोई बयान-बाजी नहीं करना चाहता। खबर है कि जो गाना फिल्म से हटाया गया हैं, उसे गीतकार कुमार ने लिखा था, कुमार द्वारा 'केसरी' का इन दिनों खूब सुना-सुनाया जा रहा गाना 'सानु केहंदी' भी लिखा गया है।

आमतौर पर इस तरह की खबरों से फिल्म सुर्खियों में आ जाती है, लेकिन 'केसरी' की टीम ने इस गाने को लेकर खामोश है। टीम का कोई भी सदस्य इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता। फिल्म 'केसरी' की कहानी 1897 में हुई सारागढ़ी की लड़ाई पर आधारित है, जो ब्रिटिश इंडियन आर्मी की सिख रेजिमेंट और अफगान-पश्तो मिलिट्री के बीच हुई थी।

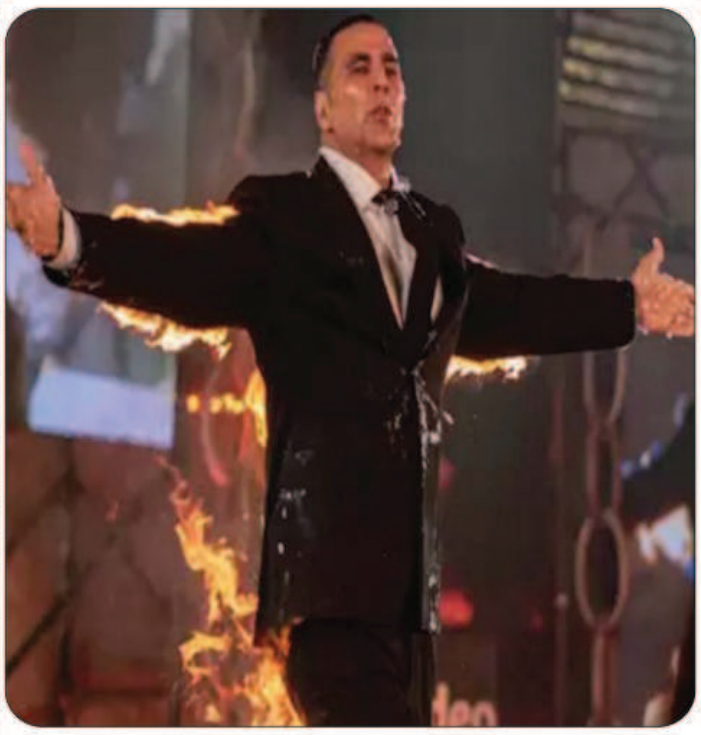

इस लड़ाई में रेजिमेंट के 21 सिख सैनिकों ने 10,000 अफगानियों का बहादुरी से सामना किया था। लड़ाई में हिस्सा लेने वाले अक्षय कुमार और परिणीति चोपड़ा स्टारर 'केसरी का निर्देशन अनुराग सिंह ने किया है। यह फिल्म 21 मार्च को देशभर के सिनेमाघरों में रिलीज़ होने वाली है।

किस मजबूरी में अमिताभ को बेचनी पड़ी गिफ़्ट की हुई करोड़ों रुपये की कार!

महानायक और बॉलीवुड के शहंशाह अमिताभ बच्चन ने विधु विनोद चोपड़ा द्वारा गिफ़्ट में दी रोल्स रॉयस कार बेच दी है। ये कार विधु विनोद चोपड़ा ने फ़िल्म एकलव्य में अमिताभ बच्चन के बेहतरीन अभिनय से ख़ुश हो कर उन्हें तोहफ़े में दी थी। 2007 में इस फ़िल्म का निर्देशन विधु विनोद चोपड़ा ने ही किया था। रिपोर्ट के मुताबिक, वैसे तो एकलव्य बॉक्स ऑफ़िस पर कुछ ख़ास कमाल नहीं कर पाई थी, लेकिन हां इस फ़िल्म को ऑस्कर में बेस्ट फॉरेन फ़िल्म कैटेगरी के नॉमिनेशन में ज़रूर रखा गया था।

अमिताभ के साथ ही इस फ़िल्म में अभिनेता सैफ़ अली खान, संजय दत्त, विद्या बालन, शर्मिला टैगोर, राइमा सेन, जिमी शेरगिल, बोमन ईरानी और जैकी श्रॉफ भी मुख़्य भूमिका में नज़र आये थे। डायरेक्टर विधु विनोद चोपड़ा ने जो रोल्स रॉयस बिग को गिफ़्ट की थी, उसकी कीमत लगभग 3.5 करोड़ के आस-पास बताई जा रही है, लेकिन महानायक ने गिफ़्ट की हुई ये कार क्यों, किस इसलिये, कितने में और किसे बेची है, इस बात का अब तक पता नहीं लगाया जा सका है।

फिलहाल मन में उठ सारे इन सवालों का किसी के पास कोई जवाब नहीं है और अमिताभ बच्चन को कार बेचने की नौबत क्यों आई है, इसका भी कुछ पता नहीं चल पाया है। बताया जा रहा है कि ये कार बिग की लग्ज़री कार में से एक थी। इसके साथ ही अमिताभ बच्चन के पास Mercedez S-Class, Range Rover, Bentley GT और Le&us SUV जैसी मंहगी कारें भी हैं।

वहीं बिग के वर्क फ्रंट पर नज़र डाले, तो फिलहाल वो सुजॉय घोष की आने वाली फ़िल्म बदला में अहम किरदार निभाते हुए दिखाई देंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, ये फ़िल्म 2016 में बनी स्पेनिश फ़िल्म द इनविजबल गेस्ट का रीमेके वर्जन है। द इनविजबल गेस्ट के इस हिंदी रीमेक में महानायक के साथ-साथ तापसी पन्नू भी लीड रोल में हैं। वहीं मर्डर मिस्ट्री पर आधारित इस फ़िल्म के प्रोडेक्शन की सारी ज़िम्मेदारी एक्टर शाहरुख़ ख़ान की कंपनी रेड चिली एंटरटेनमेंट के पास है। वहीं फ़िल्म के ट्रेलर को देखते हुए कहा जा रहा है कि ये बॉक्स ऑफ़िस पर बड़ा धमाल कर सकती है, लेकिन अभी समय फ़िल्म के बारे में बल्कि बिग बी की कार के बारे में सोचने का है।

अनुपम खेर ने शेयर किया अपनी जर्नी वाला विडियो और कहा, 'चलो, सब लोग मुझे विश करो'

आज अनुपम खेर अपना 64वां जन्मदिन सेलिब्रेट कर रहे हैं। 'सारांश' से अपने अभिनय के करियर की शुरुआत करने वाले अनुपम ने सैकड़ों फिल्मों में अभिनय किया है और आज वह अपना ऐक्टिंग स्कूल भी चलाते हैं। अपने बर्थडे पर उन्होंने अपना एक जर्नी विडियो शेयर किया है।

अनुपम खेर ने सोशल मीडिया पर अपना यह जर्नी विडियो शेयर करते हुए लिखा है, 'इंडिया में आज मेरा हैपी बर्थडे है। न्यू यॉर्क में कल होगा। मुझे जन्मदिन की शुभकामनाएं। मैं अपनी जिंदगी की जर्नी और मंत्र इस 1 मिनट के विडियो क्लिप के जरिए आपके साथ शेयर कर रहा हूं। अपनी जिंदगी में खुद ही बदल सकता हूं, कोई दूसरा यह काम मेरे लिए नहीं करेगा। चलो, सब लोग मुझे विश करो।' विडियो में उनके बचपन के साथ-साथ, जीवन को देखने का उनका अंदाज बयां किया गया है, जिसमें एक छोटे से शहर के लड़के के सफर को दिखाया गया है, जिसमें सीरियसनेस भी है, मस्ती भी है, डिसिप्लीन, इमोशंस और जुनून भी है।

हाल ही में 'द ऐक्सिडेंटल प्राइम मिनिस्टर' में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की भूमिका निभा चुके हैं अनुपम और इस किरदार को पर्दे पर उतारने में वह पूरी तरह सफल रहे। हालांकि, फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नहीं चल सकी, लेकिन अनुपम खेर मनमोहन सिंह वाले अंदाज़ में दर्शकों के दिलों में बस गए।

कंगना के कमेंट का आलिया ने दिया जवाब, दे डाली ये नसीहत

समसामयिक मुद्दों पर नहीं बोलने के लिए बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत के आलिया भट्ट पर तंज कसने के बाद अब आलिया ने अपने जवाब में कहा है कि वह फिल्म फ्क्वीनफ्र की अदाकारा का अपनी राय रखने के लिए सम्मान करती हैं लेकिन वह अपनी राय को अपने तक ही सीमित रखना पसंद करेंगी।

कंगना ने आलिया एवं फिल्म 'गली ब्वॉय' के उनके सह-कलाकार रणवीर सिंह के खुद को अराजनीतिक बताने वाले बयान को 'गैर जिम्मेदाराना' ठहराया और राजनीति पर बोलने से इनकार करने के लिए दोनों पर हमला बोला। कंगना की टिप्पणी पर पूछे जाने पर आलिया ने संवाददाताओं से कहा, 'मेरे पास निश्चित तौक पर कंगना जैसे खुलकर बात करने की क्षमता नहीं है और मैं इसके लिए सचमुच उनका सम्मान करती हूं और हो सकता है कि एक तरीके से वह सही हों, लेकिन कई बार हम चुप भी रहते हैं।'

उन्होंने कहा, 'मेरे पिता भी कहते हैं कि विश्व में इतने सारे विचार हैं कि एक राय कम भी हो तो काम चल जाएगा। इसलिए मेरी भी राय है लेकिन मैं इसे अपने तक ही रखती हूं। लेकिन काबिल-ए-तारीफ है कि वह सचमुच बहुत अच्छे से अपनी बात रखती हैं।'आलिया बुधवार रात 'आउटलुक बिजनेस वीमेन ऑफ वर्थ' के चौथे संस्करण में बोल रहीं थीं। वह हाल ही में फिल्म निर्माता बनी हैं और एटर्नल सनशाइन प्रोडक्शन्स बैनर लॉन्च किया है। आलिया आने वाले दिनों में फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' एवं 'कलंक' में नजर आएंगी।

क्रांति समय

सूरत। वेटरन्स इंडिया सुरत महिला विंग ने सशक्त नारी दीवार जो जल, थल और आकाश की रक्षा भी करते हैं शुक्रवार को महिला दिवस के उपलक्ष्य में वनिता विश्राम के गेट पर प्रतिमा लाई गई।

गुजरात हाईकोर्ट ने पूर्व आईपीएस संजीव भट्ट की जमानत याचिका खारिज की

अहमदाबाद। मादक द्रव्य की जब्ती के मामले में पिछले छह महीने से जेल में बंद पूर्व आईपीएस अधिकारी संजव भट्ट की जमानत याचिका गुजरात हाईकोर्ट ने गुरुवार को खारिज कर दी। गुजरात हाईकोर्ट की न्यायधीश सोनिया गोकानी ने 23 साल पुराने इस मामले में संजीव भट्ट को राहत देने से इंकार कर दिया। इससे पहले गत दिसंबर में बनासकांठा जिला सत्र न्यायालय ने संजीव भट्ट की जमानत याचिका खारिज कर दी थी। जिसके बाद संजीव भट्ट ने गुजरात हाईकोर्ट में अपील की थी। गौरतलब है संजीव भट्ट को 2015 में सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था। वह 1996 में बनासकांठा जिले में पुलिस अधीक्षक थे। उस वक्त एक वकील को नार्कोटिक्स के झूठे मामले में फंसाने का उनपर आरोप है। गत दिसंबर में बनासकांठा जिला सत्र न्यायालय ने संजीव भट्ट की जमानत याचिका खारिज कर दी थी। जिसके बाद संजीव भट्ट ने गुजरात हाईकोर्ट में अपील की थी। उस वक्त करीब 8 ऐसे नार्कोटिक्स मामले थे जिसमें विवाद हुआ था. इनमें कुछ आरोपी राजस्थान के हैं। राजस्थान के आरोपियों ने संजीव भट्ट पर झूठा केस दायर कर उनसे पैसे एंठने का आरोप लगाया था।

जवाहर चावड़ा भाजपा में शामिल हो गए

कांग्रेस को झटका, विधायक जवाहर चावड़ा का इस्तीफा

जवाहर चावड़ा ने विधानसभा के अध्यक्ष राजेंद्र त्रिवेदी को इस्तीफा सौंप दिया : कांग्रेस की छावनी में चिंता

अहमदाबाद । २०१९ लोकसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही देश के अलग-अलग राज्यों में सियासी हलचल तेज है । पार्टियों के भीतर भी घमासान जारी है । इस बीच कांग्रेस को गुजरात में एक बड़ा झटका लगा है । कांग्रेस के विधायक जवाहर चावड़ा ने इस्तीफा दे दिया है । शुक्रवार को चावड़ा ने विधानसभा अध्यक्ष राजेंद्र त्रिवेदी को अपना इस्तीफा सौंप दिया । जवाहर चावड़ा ने बीज ेपी जॉइन कर लिया हैं। जवाहर चावड़ा कमलम पहुंचकर गृह राज्य मंत्री प्रदिपसिंह जाडेजा के हाथ मीठाई खाई और भाज पा का खेस भी पहना । जवाहर चावड़ा को केबिनेट मंत्री पद

मिले ऐसी संभावना है। जवाहर चावड़ा सौराष्ट्र में आहिर समाज का प्रभुत्व है । चावड़ा वर्ष १९९० में पहलीबार विधायक बने थे। फिर २००७, २०१२ और २०१७ में भी चुनाव ज ीतकर चौथीबार विधायक बनने थे। पिछले कुछ दिनों से गुजरात कांग्रेस में काफी घमासान मचा हुआ है । यहां एक ओर जहां प्रदेश कांग्रेस कमिटी १२ मार्च को होने वाली पार्टी कार्यसमिति की बैठक की तैयारियों में लगी है, वहीं राजनीतिक गलियारों में ऐसी चर्चा तेज है कि कांग्रेस विधायक अल्पेश ठाकोर पार्टी के आधा दर्जन विधायकों के साथ बीजेपी में शामिल हो सकते हैं । बता दें कि ठाकोर कांग्रेस के टिकट पर पहली बार विधानसभा पहुंचे हैं और बीते काफी दिनों से पार्टी से नाराज चल रहे हैं । हालांकि अल्पेश ने अभी कांग्रेस छोड़ बीजेपी में शामिल होने के बारे में कुछ भी नहीं कहा है । पर, गुरुवार को उन्होंने इस बात के संकेत दिए थे कि वह शुक्रवार की दोपहर इस बारे में अहम फैसला ले सकते है। उधर, कांग्रेस के भीतर जारी घमासान और विधायकों की नाराजगी को कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अहमद पटेल ने खारिज कर दिया है। वडोदरा में उन्होंने साफ कहा कि पार्टी का कोई भी विधायक बीजेपी में शामिल नहीं होगा ।

सूरत में विश्व महिला दिवस पर 40 सफल महिलाओं की चित्र प्रदर्शन

सूरत। सूरत में विश्व महिला दिवस पर निमाया वुमेन्स सेंटर फॉर हेल्थ संस्था द्वारा मनाया गया। सूरत की सफल महिलाओं को सम्मानित करके 40 महिलाओं की उपयोगी गतिविधियों को सम्मानित किया गया। विज्ञान केंद्र में शानदार तीनदिवसीय महिला दिन के उत्सव का आयोजन किया गया। सूरत के विभिन्न क्षेत्रों की सफल महिलाओं के 40 चित्रों का प्रदर्शन किया गया। प्रवेश करते ही ये चित्र लोगो को अपनी ओर देखने के लिए आकर्षित कर रहे थे। ग्रेट गाला थीम पर, आज के उत्सव में महिलाओं के लिए एक ज्ञानवर्धक कार्यशाला भी थी। 6 मार्च को, ग्रेट कॉन्क्लेव में, केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी ने नर्मद यूनिवर्सिटी के हॉल में महिलाओं के सवालों के जवाब दिए। इसके साथ ही सूरत की 40 महिलाओं को सम्मानित भी किया गया। 40 प्रेरणादायक महिला चित्रों की यह कला

प्रदर्शनी आज आयोजित की गई। इन महिलाओं के यहाँ उपस्थित होने के साथ, आगंतुकों ने प्रदर्शनी के साथ महिलाओं का भी दौरा किया। और वह सक्रिय मंत्र भी जानता था।प्रदर्शनी के साथ, वेरोनिका गौतम की कार्यशाला, जिसे ड्रामा क्वीन के रूप में जाना जाता है, दोपहर 1.30 से शाम 4 बजे तक हुई, जिसमें उन्होंने नाटक की दुनिया को समझाया और अभिनय कला के बारे में बात की। 3 से 6 बजे, 7 अलग-अलग विषयों पर एक पैनल डिस्कशन प्रोग्राम और शाम 5 से 6 बजे, पामीर शाह ने टेकवांडो और सेल्फ डिफेंस वर्कशॉप में सेल्फ डिफेंस तकनीक सिखाई। 6 से 7 घंटे में, संगम के संगठन, उलेप्पी और हाटा ने सभी उपस्थित लोगों को प्रेरित करके दाना के मंच और गीत से एक पेंटिंग बनाई। कला की इस विशेष प्रस्तुति को सभी ने सराहा। बाद में शाम को 7 से 8 बजे तक, ब्रूकोएलएक्स द्वारा, वूमन्स टुडे की महिलाओं ने, खुले माइक में, अपनी कला के बिना एक श्रग दिखाया, और रात में 8 से 9 घंटे स्पेस बैंड का प्रदर्शन किया गया। महिलाएँ भी महिलाओं के शानदार प्रदर्शन पर खेलती हैं। अब 9 मार्च को ग्रेट रिदम थीम पर, सोल बे रिवर प्लॉट पर, वैलेंटाइन सिनेमा के पीछे शाम 7 बजे संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिसमें देश के प्रसिद्ध पारगमन और छाया और लाइट बैंड प्रदर्शन करेंगे।

फायनान्स के ऑफिस में युवक ने किया आत्महत्या का प्रयास

सूरत। शहर के नानपुरा इलाके में फायनान्सर के ऑफिस में एक युवक ने फिनाइल गटककर आत्महत्या का प्रयास किया। उसे तत्काल उपचार के लिए नई सिविल अस्पताल में भर्ती किया। वहां फाइनान्सर ने धोखाधड़ी करने की बात कहीं। नानपुरा विस्तार में रहनेवाले चेतन गोरसिया दो बेटिया और माता-पिता और पत्नी के साथ रहता है। उनका एक मकान

फायनान्सर मार्फत 18 लाख में बेचा था। इसमें 18 लाख के मकान के बदले में पहले दस्तावेज बनाकर लोन दी गई थी। चेतन ने लोन सेंक्शन लेटर और मंजूर हुई लोन की रकम के चेक के जेरॉक्स दिए थे। सोदे मुताबिक लोन लेने के बाद 18 लाख रुपए देने वाले थे। चेतन ने गुरूवार को फायनान्सर की नानपुरा स्थित ऑफिस पर बुलाया था। वहां रुपए देने से फाइनान्सर ने मना कर ऑफिस से निकाल दिया। जिससे चेतन ने फाइनान्सर की ऑफिस में ही फीनाइल गटक लिया। उसे उपचार के लिए सिविल अस्पताल में भर्ती किया गया।

15.77 लाख का माल खरीदने के बाद दिल्ली के व्यापारी द्वारा ठगी

सूरत। रिंगरोड की आदर्श मार्केट के व्यापारी के पास से 15.77 लाख का प्रिन्टेड और ए ब्रॉयडरी का कपड़े का माल खरीदने के बाद दिल्ली के व्यापारियों ने भुगतान नहीं चुकाया और ठगी की। जिससे मामला पुलिस थाने में पहुंचा है। घटना की जानकारी के अनुसार पुणा कुंभारिया स्वस्तिक रेसीडेन्सी में रहनेवाले राजू जैसराज शर्मा रिंगरोड की आदर्श मार्केट श्री नाकोडा टैक्स फैब नामक दुकान में नौकरी करता है। राजु शर्मा ने गतरोज दिल्ली गांधीनगर शांति मोहल्ला वीर सिंह मार्केट में बालाजी ट्रेडर्स के नाम से व्यवसाय करनेवाले मनोज जैन के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई।

पाकिस्तानी भाषा बोल रहे हैं कांग्रेस के नेता : गणपत वसावा

सूरत। पुलवामा हमले के बाद भारतीय सेना द्वारा की गई एयर स्ट्राइक का विपक्ष सबूत मांगने पर राज्य के वन मंत्री गणपत वसावा ने कांग्रेस पर कड़े प्रहार किए। सूरत के मांगरोल में उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं। एक ओर भारतीय सेना सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकियों का सफाया कर रही है, दूसरी ओर कांग्रेसी नेता पाकिस्तानी भाषा में इसके सबूत मांग रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब कभी भी पाकिस्तान के खिलाफ ऐसी कार्यवाही की जाए, तब कांग्रेस के नेता को विमान से बांधकर साथ भेजना चाहिए, ताकि सर्जिकल स्ट्राइक शूटिंग कर सबूत लेकर आएं।

गोल्ड लोन के नाम पर करोड़ों रुपए की चपत लगाने वाले बंटी- बबली गिरफ्तार

सूरत। सूरत शहर में कुछ समय पहले पेलडीयम मोल में आफिस भाड़े पर लेकर गोल्ड लोन और विदेशी करन्सी का काम किया जा रहा था। अलग-अलग व्यक्तियों के पास से पैसा लेकर चैक तथा प्रोमिशन नोट देकर पैसा अपनी पत्नि तथा माता के नाम से खाते में ट्रांसफर करवा लेते थे। इस काम के लिए अजय की पत्नी जल्पा भी लोगों को फोन कर गोल्ड लोन और विदेशी करन्सी बदलवाने के लिए लालच देती थी। इस प्रकार पति-पत्नी अनेकों लोगों के साथ धोखा धड़ी कर चुके है, और सूरत में गुनाह दाखिल होते ही दोनों राजकोट में भाग गए और वहां पर भाड़े के मकान में रह रहे थे। यह दमपती लोगों को गोल्ड

लोन के उपर ढेड गुणा लाभ देने का लालच देकर अंदाजन 2,10,50,000 रुपए इकट्ठा कर योगीचौक की आफिस को बंद कर दिया। आफिस बंद करके दंपति भागने के बाद गोल्ड लोन लेने वाले लोगों को ठगी का अहसास होने पर सरथाणा पुलिस थाने में फरियाद दाखिल करवाई।

दो विधायक के इस्तीफे से कांग्रेस में सन्नाटा

हलवद के कांग्रेस विधायक परसोत्तम साबरिया का इस्तीफा

अहमदाबाद । २०१९ लोकसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही देश के अलग-अलग राज्यों में सियासी हलचल तेज है । पार्टियों के भीतर भी घमासान जारी है । इस बीच कांग्रेस को गुजरात को बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस के विधायक जवाहर चावड़ा ने इस्तीफा दे दिया है तब कांग्रेस में से और एक इस्तीफा आया है । हलवद के विधायक परसोत्तम साबरिया ने भी कांग्रेस में से अपना इस्तीफा देने से चार घंटे में दो विधायको के इस्तीफे से कांग्रेस छावनी में सन्नाटा फैल गया है । अल्पेश ठाकोर आज दिल्ही में कांग्रेस हाइकमान्ड नेताओं से मिले।

अल्पेश ठाकोर ने दिल्ही में अहमद पटेल के साथ और राजीव सातव के साथ मुलाकात की । अपनी पत्नी के नाम लोकसभा चुनाव में टिकट फाइनल कर अल्पेश ठाकोर अपनी मांग मनाली होनी के चर्चा ने भी जोर पकड़ा हुआ है। २०१९ का लोकसभा चुनाव नजदीक है तब गुज रात में पहले कुंवरजी बवालीया, फिर आशा पटेल और आज जवाहर चावड़ा भाजपा में शामिल होने के साथ ही इस्तीफा दे दिया गया है । अभीतक परसोत्तम साबरिया ने भाजप में जुडेगें या नहीं इस बारे में कोई बयान नहीं दिया है । कल ही कांग्रेस ने २०१९ के लोकसभा चुनाव के लिए गुज रात में से चार उम्मिदवार के नाम घोषित किये है तब दुसरे दिन ही कांग्रेस को एक कमरतोड झटका मिला है ।

वाइब्रेंट में सिर्फ बातें होने का का दुष्प्रचार करने वालों को मुंहतोड़ जवाब: मुख्यमंत्री

अहमदाबाद। मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने वाइब्रेंट समिट 2019 पूर्ण होने के मात्र 45 दिनों में ही 7 मार्च को एक ही दिन में- एक साथ 1 लाख 66 हजार 347 करोड़ के विभिन्न प्रोजेक्ट्स का उदघाटन, कार्यार भ और भूमिपूजन करवाते हुए कहा कि वाइब्रेंट में सिर्फ बातें ही होती हैं, इस प्रकार का दुष्प्रचार करने वालों को आज मुंहतोड़ जवाब मिल गया है। रूपाणी ने कहा कि हमारा सिर्फ बातें करने वाले लोग नहीं हैं बल्कि ठोस इरादों के साथ वास्तविक रूप देकर जो कहते हैं, वही करते हैं वाली संस्कृति में विश्वास रखने वाले लोग हैं। आज इस समारोह से यह बात साबित भी हो गई है।

वाइब्रेंट समिट 2019 में हुए विभिन्न उद्योगों-निवेशों के समझौता करार और इंटेंशन हुए थे, उनमें से मुख्यमंत्री ने आज 459 उद्घाटन, 1030 प्रोजेक्ट्स का कार्यार भ और 248 प्रोजेक्ट्स का भूमिपूजन गांधीनगर के महात्मा मन्दिर से करवाया। इस अवसर पर उद्योग और व्यापार जगत के अग्रणी भारी तादाद में उपस्थित थे। इसके साथ ही उन्होंने गि टसिटी में गेझिया और जीआईडीसी के संयुक्त तत्वावधान में टेक हब के प्रार भ का एमओयु तथा टेक्सटाइल इंडस्ट्री सेक्टर में राज्य सरकार की सहायता-प्रोत्साहन के 400 करोड़ एवं स्स्स्थ्य सेक्टर में 384 करोड़ के लाभ लाभार्थियों के बैंक अकाउंट में सीधे ऋक्षतस्‍ से जमा करवा दिए। इस मौके पर अपने स बोधन में रूपाणी ने कहा कि जिनमें सपने देखने की शक्ति नहीं होती, वह कभी सपनों को साकार नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने युवाशक्ति- नयी पीढ़ी को नेतृत्व प्रदान किया है, वह नामुमकिन के मुमकिन होने का अहसास करवा रहा है और उनके स्वप्नों को साकार करने की राह दिखला रहा है। वाइब्रेंट समिट की पूर्णता के मात्र 45 दिन में ही 1 लाख 66 हजार करोड़ के इन प्रोजेक्ट्स को सफल बनाने का श्रेय गुजरात सरकार के संबंधित विभागों के अधिकारियों-कर्मयोगियों और उनकी मेहनत को दिया।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100, E-mail: krantisamay@gmail.com (subject to surat jurisdiction)**